पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

2017 का आपराधिक आवेदन (खंड पीठ) सं.937

कांड सं.-40 वर्ष-2015 थाना-चारपोखारी जिला-भोजपुर, से उत्पन्न

==========

कमलेश कुमार राय, स्वर्गीय उमाशंकर राय के पुत्र, निवासी गाँव-दानवन, पी. एस.-जगदीशपुर, जिला-भोजपुर।

.....अपीलार्थी

बनाम

बिहार राज्य

.....उपस्थिति

==========

भारतीय दंड संहिता - धारा 302 - पीड़िता, जो अपने पति (अपीलकर्ता) से मुकदमे में उलझी थी, को यात्री रेलगाड़ी में आग्नआस्त्र से घायल करके हत्या करने का आरोप - आकस्मिक गवाहों की गवाही की विश्वसनीयता - चूँकि ऐसा प्रतीत होता है कि प्रासंगिक स्थानों पर आकस्मिक गवाहों को भेजा गया था और प्रासंगिक स्थान पर उनकी उपस्थिति के संबंध में गवाहों के बयानों में गंभीर असंगति और विरोधाभास है, उनकी गवाही न्यायालय को विश्वास दिलाने में असमर्थ है--- प्रत्यक्षदर्शियों की गवाही की विश्वसनीयता - चूँकि प्रत्यदर्शी, जो पीड़िता के नाबालिग पुत्र हैं, घटना के ठीक बाद से लेकर पुलिस और न्यायालय के समक्ष उनकी जाँच परीक्षा की अवधि के दौरान आकस्मिक गवाहों के नियंत्रण में रहे, इसलिए वे प्रशिक्षित गवाह प्रतीत हुए और इसलिए

अविश्वसनीय हैं---प्रत्यक्षदर्शियों का आचरण भी संदिग्ध प्रतीत हुआ क्योंकि उन्होंने अपनी माँ केशव को लावारिस छोड़ दिया और थाना की ओर बढ़ना शुरुकर दिया-अभियोजन पक्ष द्वारा यह स्पष्टीकरण नहीं दिया जाना कि प्रत्यक्षदर्शी अभि.ग.-5 के प्रारंभिक और प्रथम बयान को जानबूझकर क्यों रोक दिया गया, अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक साबित हुआ-घटना का स्थान साबित करने में विफलता जिसके बारे में कहा जाता है कि वह यात्री रेलगाड़ी के एक डिब्बे का अंदर का स्थान था, अभियोजन पक्ष द्वारा स्थापित नहीं किया जा सका और इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया कि रेलवे पुलिस द्वारा जाँच क्यों नहीं की गई और संबंधित स्थानों पर मौजूद किसी भी यात्री की जाँच क्यों नहीं की गई-मेडिकल गवाह के साक्ष्य से पता चलता है कि हमलावर ने पीड़ित को आग्नेयास्त्र से घायल करने के लिए दो अलग-अलग स्थितियों का इस्तेमाल किया लेकिन उक्त परिस्थिति की प्रत्यक्षदर्शियों के साक्ष्य से पुष्टि नहीं होती-अपीलकर्ता को दोषी ठहराने और सजा देने वाले आक्षेपित निर्णय और आदेश को खारिज कर दिया गया।

पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

2017 का आपराधिक आवेदन (खंड पीठ) सं.937

कांड सं.-40 वर्ष-2015 थाना-चारपोखारी जिला-भोजपुर, से उत्पन्न

==========

कमलेश कुमार राय, स्वर्गीय उमाशंकर राय के पुत्र, निवासी गाँव-दानवन, पी. एस.-जगदीशपुर, जिला-भोजपुर।

.....अपीलार्थी

बनाम

बिहार राज्य

.....उपस्थिति

==========

अपीलार्थी/ के लिए: श्री रवीन्द्र कुमार, अधिवक्ता

श्री संदीप कुमार पांडे,

प्रत्यर्थी के लिये अधिवक्ताः सुश्री शशि बाला वर्मा, अतिरिक्त लो.अभि.

कोरम: माननीय न्यायमूर्ति श्री राजीव रंजन प्रसाद

और

माननीय श्री जस्टिस शैलेंद्र सिंह

कैव निर्णय

(माननीय न्यायमूर्ति श्री शैलेंद्र सिंह)

तिथी 04-03-2024

श्री रवीन्द्र कुमार, अपीलार्थी के विद्वान वकील और सुश्री शशि बाला वर्मा, राज्य के लिए विद्वान अतिरिक्त अधिवक्ता को सुना।

2. 2015 के चारपोखारी थाना केस नंबर 40 से उत्पन्न 2015 के सेशन ट्रायल केस नंबर 112 में आरा में चौथे अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश, भोजपुर द्वारा पारित दोषसिद्धि और सजा के आदेश दिनांक 11.07.2017 और 17.07.2017 के खिलाफ तत्काल अपील दायर की गई है, जिसके तहत और जिसके तहत विद्वत ट्रायल कोर्ट ने अपीलार्थी को भारतीय दंड संहिता की धारा (संक्षेप में 'भा.द.सं.') के तहत दंडनीय अपराध के लिए दोषी पाया है और उसे सजा सुनाई है। 50,000/- रुपये के जुर्माने के साथ आजीवन कारावास की सजा काटें और आगे रु। जमा किए गए जुर्माने में से 40,000/- का भुगतान मृतक के बेटों को किया जाए (इसके बाद 'पीड़ित' के रूप में संदर्भित)।

<u>अभियोजन की कहानीः</u>

3. अभियोजन पक्ष की संक्षिप्त कहानी यह है कि पीड़ित पुत्र, लगभग 12 साल के मनीष @लव कुमार ने लगभग 2ः15 बजे अपराह्न 06.02.2015 को चारपोखारी थाना के स्टेशन हाउस ऑफिसर के सामने अपना बयान दर्ज कियाः चारपोखारी थाना में पी. एम. ने आरोप लगाया कि 06.02.2015 पर वह, उसका जुड़वां भाई (अभि.ग.-4) अपनी मां रेखा देवी (पीड़ित) के साथ आरा में पारिवारिक अदालत गया था क्योंकि उसकी मां ने वर्ष 2012 में उसके पिता (अपीलकर्ता) के खिलाफ मामला दर्ज किया था, लेकिन उसके पिता उस तारीख को अदालत में पेश नहीं हुए थे, इसलिए अदालत ने एक और तारीख यानी 19.03.2015 निर्धारित की और उसके बाद वह, उसका भाई और माँ लगभग 1ः00 बजे अपराह्नन आरा रेलवे स्टेशन गएः एक यात्री ट्रेन में चढ़ने के लिए, गए फिर उसने देखा कि उसके पिता (अपीलकर्ता), उसके चाचा राम बाबू राम, मिथलेश राय और शिव चौधरी भी आरा रेलवे स्टेशन पर मौजूद थे और वे भी उसी ट्रेन में सवार हुए और एक अन्य डिब्बे में प्रवेश किया, जब ट्रेन गढ़ानी स्टेशन पर रुकी, तो उसने देखा कि उसके पिता और चाचा उन्हें खोजते हुए अपने डिब्बे में प्रवेश कर गए और उसके बाद ट्रेन आगे बढ़ने लगी और गढ़ानी पड़ाव पर पहुंच गई और ट्रेन फिर से 1ः45 बजे अपराह्नन में चलने लगीः गढ़ानी हाल्ट

से तो अचानक उसके चाचाओं ने उसके पिता से कहा कि पीड़िता को गोली मारने का एक अच्छा मौका है, उस उकसावे पर, उसके पिता ने पिस्तौल का उपयोग करके उसकी माँ (पीड़ित) के शरीर पर तीन गोलियां चलाईं और उसके बाद, सभी आरोपी ट्रेन से कूदने के बाद जब ट्रेन धीमी हो गई, भागने में कामयाब रहे जब और उसके बाद, ट्रेन चारपोखारी रेलवे स्टेशन पर रुकी और उस समय वह और उसका भाई डर गए। उसने आगे आरोप लगाया कि चारपोखारी रेलवे स्टेशन पर वह और उसका भाई उतर गए और चारपोखारी थाना ओर बढ़ने लगे, फिर वे अपने चाचा और चचेरे भाई नाना से मिले, जो उनके साथ चारपोखारी पुलिस स्टेशन गए, जहाँ उन्होंने अपना बयान दर्ज कराया। मुखबिर ने अपने फरदबेयान में घटना के कारण का खुलासा किया क्योंकि अपीलार्थी का अनुसूचित जाति की एक अन्य महिला के साथ अवैध संबंध था, जिसके परिणामस्वरूप अपीलार्थी और पीड़ित के बीच तनावपूर्ण संबंध बन गए, जिसे हमेशा अपीलार्थी द्वारा शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता था और अंत में पीड़ित ने अपीलार्थी को छोड़ दिया और अपने बच्चों के साथ गोपालपुर ग्राम में अपने मातृ गृह में रहने लगी और पारिवारिक अदालत, आरा में भी मामला दर्ज कराया और मुखबिर के अनुसार उसकी माँ (पीड़ित) की ट्रेन में ही मौत हो गई।

4. मनीष कुमार उर्फ लव कुमार (अभि.ग.-5) के बयान (बयान) पर उनके, उनके भाई, चाचा और चचेरे भाई के दादा ने हस्ताक्षर किए थे, जो सूचना देने वाले के साथ चारपोखारी पुलिस मुखबिर के बेयान के आधार पर, 2015 का चारपोखारी थाना कांड संख्या 40 वाली औपचारिक प्राथमिकी अपीलार्थी सहित चार अभियुक्त व्यक्तियों के खिलाफ भा.द.सं. की धारा 302,120 बी/34 और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत दर्ज की गई थी।

5. जाँच के बाद, पुलिस ने आरोपी शिव चौधरी उर्फ रामजी राय के खिलाफ आरोप पत्र प्रस्तुत किया और उसके मामले को अन्य सह-अभियुक्त व्यक्तियों से अलग कर दिया गया और उसके बाद, सत्र न्यायालय को सौंप दिया गया। अपीलार्थी के खिलाफ एक

पूरक आरोप पत्र प्रस्तुत किया गया था और अन्य दो सह-अभियुक्त व्यक्तियों के खिलाफ जांच लंबित रखी गई थी। अपीलार्थी और सह-अभियुक्त शिव चौधरी उर्फ रामजी राय के सत्र परीक्षण मामलों को मिला दिया गया।

6. अपीलार्थी पर भा.द.वि. की धारा 34 और भा.द.वि. की धारा 120 बी के साथ पठनीय अपराधों के लिए आरोप लगाया गया था और शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत दंडनीय अपराध के लिए भी आरोप लगाया गया था। जबकि सह-अभियुक्त शीओ चौधरी उर्फ रामजी राय पर भी भा.द.वि. की धारा 34 और भा.द.वि. की धारा 120 बी के साथ पठित दंडनीय अपराधों के लिए आरोप लगाया गया था। अपीलार्थी को आरोपों को हिंदी में समझाया गया था, जिस पर उसने इनकार कर दिया और मुकदमा चलाने का दावा किया।

7. अभियोजन पक्ष ने मौखिक साक्ष्य में निम्नलिखित गवाहों से पूछताछ कीः

अभि.ग.-1 - देवमुनि राम उर्फ देवमुनि चौधरी

अभि.ग.-2 - महेंद्र कुमार

अभि.ग.-3- विजय चौधरी

अभि.ग.-4- कुश कुमार

अभि.ग.-5- मनीष कुमार @लव कुमार

अभि.ग.-6- अरशद राजा (जांच अधिकारी)

अभि.ग.-7- धनंजय कुमार पांडे (पुलिस उपनिरीक्षक जिन्होंने मृत्यु समीक्षा बनाई)

अभि.ग.-8- रुदल पासवान (सहायक उप निरीक्षक चारपोखारी थाना तैनात)

अभि.ग.-9- डॉ. मिथलेश कुमार (डॉक्टर जिन्होंने मृतक के शरीर का पोस्टमॉर्टम किया)

8. अभियोजन पक्ष ने निम्नलिखित दस्तावेजों को साबित किया और उन्हें प्रदर्शित किया जो इस प्रकार हैंः

साक्ष्य-1 - फरदबेयान पर देवमुनि राम के हस्ताक्षर।

साक्ष्य-2- जब्ती सूची में देवमुनि राम के हस्ताक्षर हैं।

साक्ष्य-3- आप.द.सं. की धारा 164 के तहत दर्ज किए गए बयान पर कुश कुमार के हस्ताक्षर।

साक्ष्य 4ः- मनीष कुमार उर्फ लव कुमार का फर्दव्यान पर हस्ताक्षर

साक्ष्य-5- Cr.P.C की धारा 164 के तहत बयान पर मनीष कुमार @लव कुमार के हस्ताक्षर।

साक्ष्य-6- फरदबेयान।

साक्ष्य-7- मृत्यु समीक्षा

साक्ष्य-8- जब्ती सूची पर एक पुलिस अधिकारी के हस्ताक्षर

साक्ष्य-9- पोस्टमार्टम रिपोर्ट।

9. अभियोजन पक्ष ने दो खाली कारतूस पेश किए और उन्हें निम्नानुसार भौतिक वस्तुओं के रूप में प्रदर्शित कियाः और I और II-खाली कारतूस

10. अभियोजन पक्ष के साक्ष्य के पूरा होने के बाद अपीलार्थी का बयान दर्ज किया गया जिसमें अभियोजन पक्ष के साक्ष्यों से उसके खिलाफ दिखाई देने वाली मुख्य परिस्थितियों को उसे समझाया गया था, जिसे उसने अस्वीकार कर दिया था और उसने मुख्य रूप से बचाव पक्ष लिया कि कथित घटना के समय, वह जम्मू में अपनी ड्यूटी पर था और पीड़ित के बच्चों ने अपने मातृ परिवार के सदस्यों के कारण गलत अनुनय के प्रभाव में उसके खिलाफ गवाही दी, जिनके साथ वे वर्ष 2012 से रह रहे थे।अपीलार्थी ने खुद को निर्दोष व्यक्ति होने का दावा किया।

11. बचाव में अपीलार्थी ने चार गवाहों से पूछताछ की और निम्नलिखित दस्तावेजों को दस्तावेजी साक्ष्य में प्रदर्शित कियाः

साक्ष्य-ए- मेस डाइट रजिस्टर।

साक्ष्य-बी- उपस्थिति रजिस्टर दिनांक 06.02.2015।

साक्ष्य-सी- आगमन प्रस्थान रजिस्टर।

साक्ष्य-डी- मेन गेट ड्यूटी रजिस्टर।

साक्ष्य-ई- इन आउट रजिस्टर का पृष्ठ 17 से 19।

साक्ष्य-एफ- शुल्क रजिस्टर।

साक्ष्य-जी- जगदीशपुर थाना केस सं. 149/12 का अंतिम प्रपत्र।

साक्ष्य-एच- उमा शंकर पासी का मृत्यु प्रमाण पत्र।

अपीलार्थी की ओर से तर्कः

12. अपीलार्थी के विद्वान वकील श्री रवींद्र कुमार ने तर्क दिया है कि अभियोजन पक्ष ने उन गवाहों से पूछताछ की जो मृतक के करीबी रिश्तेदार हैं, उनमें से अभि.ग.-4 और अभि.ग.-5 जो मृतक के बेटे हैं और जो खुद को चश्मदीद गवाह होने का दावा करते हैं, प्रशिक्षित गवाह हैं और उनकी गवाही में भौतिक भिन्नता भी है।कथित घटना ट्रेन के एक डिब्बे में हुई थी जो यात्रियों से भरा हुआ था, लेकिन उनमें से किसी की भी पुलिस द्वारा जांच नहीं की गई थी और न ही अभियोजन पक्ष द्वारा निचली अदालत के समक्ष उनमें से किसी की भी जांच करने का कोई प्रयास किया गया था, जो सबसे अच्छे स्वतंत्र गवाह थे, लेकिन उन्हें जानबूझकर रोक दिया गया था। यह आगे तर्क दिया गया है कि अभि.ग.-1, अभि.ग.-2 और अभि.ग.-3 पीड़ित के रिश्तेदार हैं और संयोग गवाह भी हैं और उनके साक्ष्य में गंभीर विरोधाभास हैं और उन्होंने संबंधित स्थानों पर अपनी उपस्थिति के बारे में विरोधाभासी बयान दिए और उनके साक्ष्य संयोग से संबंधित स्थानों पर अपनी उपस्थिति दिखाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं और विश्वसनीय और आगे अभि.ग.-4 और पीडब्लू-5, जो पीड़ित के बेटे हैं, अभि.ग.-1 और अभि.ग.-2 के अनुनय और प्रभाव में गवाही देते हैं और कथित घटना के बाद से और चारपोखारी थाना पहुंचने तक उनका आचरण अत्यधिक अविश्वसनीय रहा। यह आगे प्रस्तुत किया गया है कि कथित घटना एक यात्री ट्रेन के डिब्बे के अंदर हुई थी, लेकिन जांच रेलवे पुलिस द्वारा नहीं की गई थी, बल्कि सामान्य पुलिस

द्वारा की गई थी, जिसके बारे में अभियोजन पक्ष द्वारा कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया था और एक पुलिस अधिकारी, जिसने इस्तेमाल किए गए खाली कारतूस की बरामदगी की थी, को अभियोजन पक्ष द्वारा पेश नहीं किया गया था और जांच नहीं की गई थी। यह तर्क दिया गया है कि मृतक के शरीर पर मिली आग्नेयास्त्र की चोटों की प्रकृति और विवरण को देखते हुए, पीड़ित पुत्र (अभि.ग.-5) द्वारा सुनाई गई गोलीबारी की कथित घटना का तरीका संभावित नहीं था क्योंकि डॉक्टर की राय को देखते हुए हमलावर द्वारा दो अलग-अलग स्थानों से गोलीबारी की गई होगी और इसके अलावा, जांच अधिकारी ने रक्त के धब्बों को जब्त नहीं किया, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे घटना स्थल पर पाए गए थे। यह आगे प्रस्तुत किया गया है कि अपीलार्थी घटना के कथित दिन जम्मू में अपने पोस्टिंग स्थान पर ड्यूटी पर था, इसलिए उसके लिए अपनी पत्नी की हत्या की कथित घटना और इस संबंध में, उनके द्वारा मौखिक और दस्तावेज के रूप में पर्याप्त साक्ष्य दिए गए थे।

<u>राज्य की ओर से तर्कः</u>

13. इसके विपरीत, राज्य की ओर से उपस्थित विद्वान स.लो.अभि. सुश्री शशि बाला वर्मा ने अपील का जोरदार विरोध किया और कहा कि अपीलकर्ता अपनी पत्नी की हत्या करने वाला मुख्य हमलावर था और अभि.ग.-4 और अभि.ग.-5, जो पीड़ित के बेटे हैं, संबंधित ट्रेन के डिब्बे में पीड़ित के साथ मौजूद थे, जिसमें कथित घटना हुई थी और उन्होंने पूरी घटना को अपनी आंखों से देखा और आप.द.सं. की धारा 164 के तहत बयान दर्ज करते हुए न्यायिक दंडाधिकारी के समक्ष अभियोजन पक्ष की कहानी का पूरी तरह से समर्थन किया। साथ ही साथ निचली अदालत के समक्ष अपने साक्ष्य दर्ज करते हुए और कथित स्थानों पर अभि.ग.-1, अभि.ग.-2 और अभि.ग.-3 की उपस्थिति काफी स्वाभाविक थी, जिसके बारे में उन्होंने पर्याप्त स्पष्टीकरण दिया और उनके साक्ष्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। यह आगे प्रस्तुत किया गया है कि अपीलार्थी द्वारा पीड़ित को बंदूक की तीन गोली से घायल करने का आरोप पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में वर्णित मृतक की बाहरी चोटों से पूरी

तरह से पुष्टि करता है और निचली अदालत के निष्कर्ष को सही ठहराने के लिए पर्याप्त सबूत हैं और तत्काल अपील में कोई योग्यता नहीं है इसलिए इसे खारिज किया जा सकता है।

विश्लेषणः

14. हमने दोनों पक्षों के विद्वान वकीलों को सुना है, उपलब्ध सामग्रियों और साक्ष्यों का अध्ययन किया है और अभियुक्त/अपीलार्थी के बयान का भी अध्ययन किया है।

15. अपीलार्थी के वकील द्वारा किया गया पहला और सबसे महत्वपूर्ण तर्क यह है कि देवमुनि राम उर्फ देवमुनि चौधरी (अभि.ग.-1), महेंद्र कुमार (अभि.ग.-2) और विजय चौधरी (अभि.ग.-3) की उपस्थिति, जिन्हें मौका गवाह के रूप में दिखाया गया है, को स्थापित और निर्मित किया गया था क्योंकि इन गवाहों के बयानों में गंभीर विसंगति और विरोधाभास है जो संबंधित स्थानों पर उनकी उपस्थिति के बारे में है जहां उन्होंने उपस्थित होने का दावा किया था।

16. **राजेश यादव और एक अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (2022)12 एस सी सी 200** में प्रतिवदित किया गया के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि "एक संयोग गवाह के साक्ष्य के लिए बहुत सतर्क और करीबी जांच की आवश्यकता होती है और एक संयोग गवाह को घटना के स्थान पर अपनी उपस्थिति की पर्याप्त व्याख्या करनी चाहिए।एक संयोग गवाह की गवाही, जिसकी घटना स्थल पर उपस्थिति संदिग्ध बनी हुई है, को खारिज कर दिया जाना चाहिए।

17. उपरोक्त विवाद की जांच करने के लिए, हमने इन गवाहों की गवाही का अध्ययन किया है।

18. हालाँकि, इन गवाहों को एक चश्मदीद गवाह के रूप में नहीं कहा जाता है, लेकिन उनके साक्ष्य पीडब्लू-4 और पीडब्लू-5 द्वारा अपीलार्थी के खिलाफ लगाए गए आरोप की विश्वसनीयता को साबित करने के लिए बहुत प्रासंगिक हैं, जिन्होंने खुद को हत्या की

कथित घटना के चश्मदीद गवाह के रूप में दावा किया था।कथित घटना लगभग 1 बजे गढ़नी हाल्ट में एक यात्री ट्रेन के डिब्बे में हुईः 45 पी. एम. और आरोप के अनुसार, अपीलकर्ता जो पीड़ित का पति होता है, आरा रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में चढ़ गया और पीडिता उसी स्टेशन से उसी ट्रेन में चढ़ गयी और अपीलकर्ता के साथ उसके अपने भाई राम बाबू राय, मिथिलेश राय और चाचा शिव चौधरी भी थे, जो उसके साथ ट्रेन में सवार हुए और जब ट्रेन गढ़नी पड़ाव पर पहुंची, तो अपीलकर्ता ने सह-अभियुक्त व्यक्तियों के उकसावे पर पिस्तौल का उपयोग करके अपनी पत्नी के शरीर में करीब से तीन गोलियां चलाईं और उसके बाद, वह और सह-आरोपी व्यक्ति भागने में कामयाब रहे और जब ट्रेन चारपोखारी रेलवे स्टेशन पर पहुंची, तो पीडिता के लगभग 12 साल के नाबालिग जुड़वां बेटे, जो उस समय पीडिता के साथ यात्रा कर रहे थे, घटना को देखकर बुरी तरह भयभीत होगा और ट्रेन से चारपोखरी रेलवे स्टेशन पर उत्र गए । इसके बाद वे चारपोखरी थाना की ओर बढने लगे, लेकिन इसी बीच उनकी मुलाकात अभि.ग.1 से हुई जो रिश्ते में दादा लगते है और अभि.ग.2 महेन्द्र कुमार भी मिले जो पिडिता के भाई है और उस समय पीडब्लू-1 और पीडब्लू-2 दोनों एक साथ आ रहे थे। पीडब्लू-1 ने कहा कि वह और पीडब्लू-2 पीड़ित के दोनों बच्चों से वर्नी मोड़ में मिले जो चारपोखारी रेलवे स्टेशन से लगभग 500 गज की दूरी पर पूर्वी तरफ स्थित है। कथित घटना लगभग 1 बजे हुईः 45 गढ़ानी स्टॉप पर पी. एम. और उसके बाद ट्रेन 8-10 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद चारपोखारी रेलवे स्टेशन पर पहुंची और अभि.ग.-1 के अनुसार, वर्णी मोड़ रेलवे स्टेशन से 500 गज की दूरी पर स्थित है। अभि.ग.-2 को अनुच्छेद संख्या में अपदस्थ कर दिया गया है। उनकी प्रतिपरीक्षा का '9' जो वे 2 बजे वर्नी मोड़ पर पहुँचेः00 पी. एम. अभि.ग.-1 के अनुसार, पीडब्लू-2 उनके साथ वर्नी मोड़ पहुंचे, इसलिए ये दोनों गवाह 2 बजे वर्नी मोड़ पहुंचेः 00 घटना के बाद, ट्रेन को चारपोखारी रेलवे स्टेशन पर पहुंचने में कम से कम 10 से 15 मिनट का समय लगा होगा और उसके बाद, दो बच्चों द्वारा पैदल 500 गज की दूरी तय करने के लिए, कम से कम आधे घंटे का समय

चाहिए। इसलिए, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, वर्नी मोड़ में अभि.ग.-1 और अभि.ग.-2 के साथ पीड़ित के बच्चों की बैठक 2ः00 बजेः अपराह्नन पी. एम. संभव नहीं प्रतीत होता है। इसके अलावा, पीडब्लू-1 ने अपदस्थ कर दिया कि उस समय, वह और पीडब्लू-2 चारपोखारी बाजार जा रहे थे। लेकिन उन्होंने इस कारण का खुलासा नहीं किया कि वे चारपोखारी बाजार क्यों जा रहे थे, जबकि अभि.ग.-2ः00 अपराह्नन में किसी अन्य जिले का निवासी है। जब कोई संयोग से किसी विशेष स्थान पर उपस्थित होने का दावा करता है तो वह उस स्थान पर अपनी उपस्थिति का कारण दिखाने के लिए बाध्य होता है। लेकिन इस मामले में अभि.ग.-1 और अभि.ग.-2 के बारे में चुप रहे। यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक है कि अभि.ग.-1 और अभि.ग.-2 दोनों पीड़ित के रिश्तेदार हैं। अभि.ग.-1 को अनुच्छेद संख्या में 4 अपदस्थ कर दिया गया है। '4' ने अपनी प्रतिपरीक्षा में कहा कि ट्रेन में कई यात्री थे जो पीड़ित के बच्चों के साथ ट्रेन से उतरे और कई लोग स्टेशन पर आ-जा रहे थे, लेकिन उनमें से किसी ने भी पीड़ित के बच्चों को सांत्वना देने का कोई प्रयास नहीं किया, जो उस समय रो रहे थे और उस समय कोई भी बच्चों से बात नहीं कर रहा था। जबकि अभि.ग.-2 ने एक विपरीत तथ्य को अपदस्थ कर दिया और कहा कि लोग बच्चों से पूछताछ कर रहे थे। यह विरोधाभास वर्नी मोड़ में अभि.ग.-1 और अभि.ग.-2 की उपस्थिति के बारे में संदेह पैदा करता है। अभि.ग.-1 के अनुसार, दोनों बच्चों को उनके द्वारा चारपोखारी थाना ले जाया गया और अभि.ग.-2 जहां स्टेशन हाउस ऑफिसर (संक्षेप में 'एस. एच. ओ.') ने दोनों बच्चों का बयान (बेयान) दर्ज किया और उसके बाद, एस. एच. ओ. ने उन्हें पीरो रेलवे स्टेशन पर जाने के लिए कहा जहां पीड़ित का शव पड़ा था। गवाह ने पैराग्राफ सं.11. में गवाही दी। उनकी प्रतिपरीक्षा में कहा गया था कि वे कुछ अन्य व्यक्तियों, लालमूर्ति पासवान और बोध नारायण सिंह के साथ दो मोटरसाइकिलों से पीरो रेलवे स्टेशन गए थे और प्रत्येक मोटरसाइकिल पर तीन सवार थे। इस बयान से यह स्पष्ट है कि पीड़ित के दोनों बच्चों को मोटरसाइकिल पर पीरो रेलवे स्टेशन ले जाया गया था।

लेकिन अभि.ग.-4, पीड़ित पुत्र ने मुख्य परीक्षा में गवाही दी कि उसके और उसके भाई का बयान दर्ज करने के बाद, वे पुलिस वाहन से पीरो गए और उसके चाचा और दादा मोटरसाइकिल से पीरो गए। चारपोखारी स्टेशन से पीरो स्टेशन तक पीड़ित बच्चों की यात्रा के तरीके के संबंध में विरोधाभास चारपोखारी रेलवे स्टेशन पर अभि.ग.-1 और अभि.ग.-2 की उपस्थिति के संबंध में गंभीर संदेह पैदा करता है। इसके अलावा, अभि.ग.-2 ने बयान दिया कि वह पांच घंटे थाना में रहा और उसके बाद, कथराई ग्राम चला गया और अगली सुबह वह थाना लौट आया। अभि.ग.-1, जो संबंधित समय पर अभि.ग.-2 के साथ था, ने अभि.ग.-2 के उक्त कथन का समर्थन करने के लिए कोई तथ्य नहीं बताया। अभि.ग.-1 ने कुछ व्यक्तियों के नामों का खुलासा किया, जैसे कि चंद्र नारायण और भिखारी राम, जिनसे वह पीड़ित के बच्चों के साथ चारपोखारी थाना जाने के दौरान मिले थे और उक्त व्यक्ति अभि.ग.-1 ग्राम के निवासी हैं, लेकिन उनमें से किसी को भी अभियोजन पक्ष द्वारा पेश नहीं किया गया और पूछताछ नहीं की गई। अभि.ग.-1 के अनुसार, दो व्यक्ति, लालमूर्ति पासवान और बोध नारायण सिंह भी अन्य लोगों के साथ दो मोटरसाइकिलों पर उनके साथ पीरो स्टेशन गए, लेकिन न तो लालमूर्ति पासवान और न ही बोध नारायण सिंह को अभियोजन पक्ष द्वारा पेश किया गया और उनसे पूछताछ की गई और अभियोजन पक्ष द्वारा पटना उच्च न्यायालय सी. आर. द्वारा जांच के दौरान इन व्यक्तियों के बयान दर्ज करने के लिए किसी भी कदम के बारे में जॉच अधिकारी द्वारा खुलासा नहीं किया गया है।

अभि.ग.-1 ने बयान दिया कि जब वे पीरो स्टेशन पर पहुंचे, तो पुलिस पहले से ही वहां मौजूद थी, लेकिन पुलिस द्वारा किसी भी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं की जा रही थी और उस समय पीरो रेलवे स्टेशन पर कोई ज्ञात यात्री मौजूद नहीं था और उनके पहुंचने के बाद (अभि.ग. -1 और अभि.ग. -2 पीड़ित के बच्चों के साथ), पुलिस चौकीदार ने कहा कि उपयुक्त व्यक्ति आ गए थे ताकि आगे की कार्रवाई शुरू की जा सके और उसके बाद, पुलिस ने अपनी कार्यवाही शुरू की। लेकिन अभि.ग. -2 ने जाँच-प्रमुख में कहा कि जिस क्षण वे

पीरो रेलवे स्टेशन पर पहुंचे, पीड़ित के शव को ट्रेन से निकाला जा रहा था। इस प्रकार, अभि.ग. -2 ने पीरो रेलवे स्टेशन पर पीडब्लू-1 और अभि.ग. -2 के पहुंचने से पहले पुलिस की गैर-कार्रवाई के बारे में अभि.ग. -1 के बयान का खंडन किया।

19. तत्काल मामले में, अभि.ग. -3 के अनुसार, पीरो पुलिस स्टेशन के पुलिस अधिकारियों ने पीरो रेलवे स्टेशन पर मृतक (पीड़ित) की जांच रिपोर्ट तैयार की और पीरो पुलिस स्टेशन के एस. एच. ओ. ने भी एक रिपोर्ट तैयार की। गवाह ने खुद को जाँच की कार्यवाही का गवाह होने का दावा किया और कहा कि उसने और एक अन्य व्यक्ति, दीपक, जो उस समय उसके साथ था, ने जाँच रिपोर्ट पर अपने हस्ताक्षर किए। अभि.ग. -3 को एक संयोग गवाह भी कहा जाता है जिसकी प्रासंगिकता केवल मृतक की जांच रिपोर्ट को साबित करने की सीमा तक है। गवाह ने गवाही दी कि पीरो रेलवे स्टेशन पर, वह और उनके साथी दीपक पटना उच्च न्यायालय सी. आर. 2017 का एपीपी (डीबी) No.937 दिनांक। वे ट्रेन का इंतजार कर रहे थे लेकिन इस बीच उन्हें ट्रेन में हत्या होने की खबर मिली तो उन्होंने शव की जांच भी देखी और फिर उन्होंने पाया कि पीड़ित उसका रिश्तेदार था। लेकिन गवाह ने पीरो रेलवे स्टेशन पर पीडब्लू-1 और पीडब्लू-2 की उपस्थिति का खुलासा नहीं किया जब पीरो थाना के पुलिस अधिकारियों द्वारा जांच रिपोर्ट तैयार की जा रही थी। जबकि अभि.ग. -1 के अनुसार, पुलिस ने उक्त स्टेशन पर पहुंचने पर पीरो रेलवे स्टेशन पर आगे बढ़ना शुरू कर दिया। अभि.ग. -3 ज्ञात है और अभि.ग. -1 और अभि.ग. -2 का रिश्तेदार है, इसलिए अगर अभि.ग.-3 पीरो रेलवे स्टेशन पर मौजूद था जब पुलिस पूछताछ की तैयारी कर रही थी तो निश्चित रूप से अभि.ग. -3 की उपस्थिति को अभि.ग. -1 और अभि.ग. -2 द्वारा पहचाना गया होगा, लेकिन इस संबंध में दोनों अपने साक्ष्य में चुप रहे। इसलिए, पीरो रेलवे स्टेशन पर अभि.ग.-3 की उपस्थिति भी संदिग्ध प्रतीत होती है।

20. यहाँ यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि पीड़ित को आग्नेयास्त्र से चोट पहुँचाकर हत्या की कथित घटना एक यात्री ट्रेन में हुई थी और अभियोजन पक्ष के गवाहों के

साक्ष्य में यह सामने आया है कि ट्रेन में कई यात्री थे और साथ ही पीरो स्टेशन पर भी जहां शव को ट्रेन से बाहर निकाला गया था, लेकिन किसी भी यात्री को पुलिस द्वारा गवाह नहीं बनाया गया था और इस संबंध में मुकदमे के दौरान अभियोजन पक्ष द्वारा कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया था। यह उल्लेख करना आगे प्रासंगिक है कि जब एक चलती या खड़ी ट्रेन में अपराध किया जाता है तो ऐसे अपराध के बारे में कुछ रिपोर्ट निश्चित रूप से ट्रेन गार्ड या अन्य रेलवे अधिकारी द्वारा की जाती है, लेकिन वर्तमान मामले में, कोई भी रेलवे अधिकारी जो या तो ट्रेन गार्ड के रूप में या अन्यथा संबंधित ट्रेन में मौजूद था, जिसमें कथित घटना चारपोखारी और पीरो रेलवे स्टेशन पर हुई थी या मौजूद थी, न ही उनमें से किसी को पुलिस द्वारा गवाह बनाया गया था और जांच अधिकारी का यह आचरण अभियोजन पक्ष की कहानी में गंभीर संदेह पैदा करता है और अभि.ग.-1, अभि.ग..-2 और अभि.ग..-3 के रोपण और निर्माण के बारे में एक मजबूत संदेह पैदा करता है।

21. अपीलार्थी के वकील द्वारा किया गया दूसरा महत्वपूर्ण तर्क यह है कि हत्या की कथित घटना के ठीक बाद पीड़ित के नाबालिग बेटों का आचरण अप्रमाणित रहा और अपीलार्थी के खिलाफ उनके द्वारा लगाए गए आरोप के संबंध में, उन्होंने शुरू से ही एक प्रशिक्षित गवाह की तरह अपने बयान दिए जब उन्होंने पहली बार अपना फरदबेयान दर्ज किया और उसके बाद, न्यायिक दडाधिकारी के समक्ष और परीक्षण न्यायाधीश के समक्ष मुकदमे के दौरान अपने बयान दर्ज किए। यह न्यायालय उक्त तर्क में सार पाता है क्योंकि कथित घटना के शुरू होने के बाद से और निचली अदालत में साक्ष्य दर्ज होने तक, पीड़ित को दोनों नाबालिग बेटे अभि.ग.-1 और अभि.ग.-2 के संपर्क में रहे जिनकी उपस्थिति संबंधित स्थानों पर संदिग्ध थी जैसा कि ऊपर चर्चा की गई थी।तत्काल गोलीबारी की कथित घटना गढ़ानी हाल्ट में हुई और उसके बाद ट्रेन आगे बढ़ने लगी और चारपोखारी रेलवे स्टेशन पर पहुंची जो गढ़ानी हाल्ट से लगभग 10 से 12 किलोमीटर दूर है। अभि.ग.-4 और अभि.ग.-5 के साक्ष्य के अनुसार, जो पीड़ित के बच्चे हैं, वे उक्त रेलवे स्टेशन पर ट्रेन

पहुंचने पर चारपोखारी रेलवे स्टेशन पर उतर गए और दोनों अकेले चारपोखारी थाना की ओर बढ़ने लगे। पीड़ित के बच्चों का उक्त आचरण कुछ संदिग्ध प्रतीत होता है क्योंकि उन्होंने अपनी माँ के शव को बिना देखे छोड़ दिया और उसके बाद, वे अकेले चारपोखारी थाना की ओर बढ़ने लगे। तदनुसार, हम अपीलार्थी के वकील के उपरोक्त विवाद में बल पाते हैं।

22. अपीलार्थी के वकील द्वारा दिया गया तीसरा महत्वपूर्ण तर्क यह है कि चारपोखारी पुलिस के समक्ष पीड़ित के बेटों के प्रारंभिक और पहले विवरण को अभियोजन पक्ष द्वारा दबा दिया गया था और रोक दिया गया था और इस संबंध में अभि.ग.-5 द्वारा कंडिका सं-21 उनकी प्रतिपरीक्षा का '21' महत्वपूर्ण है। इस विवाद के आलोक में, हमने अभि.ग.-5 की गवाही का अवलोकन किया है, जिसने कंडिका सं.21 मे उनकी प्रतिपरीक्षा का बेयान को एक खाली कागज और उनके दादा और चाचा ने अपने पहले बेयान पर अपने हस्ताक्षर नहीं किए थे। साक्ष्य '4', जिसे अभि.ग.-5 का फरदबेयान कहा जाता है, उस आधार पर प्राथमिकी दर्ज की गई थी, में अभि.ग.-1, अभि.ग.-2 के साथ-साथ अभि.ग.-5 और उसके भाई के हस्ताक्षर हैं। लेकिन जिरह में इस गवाह द्वारा दिए गए बयान के अनुसार उनके द्वारा दिए गए पहले बयान पर पीडब्लू-1 और पीडब्लू-2 द्वारा हस्ताक्षर नहीं किए गए थे। अभियोजन पक्ष द्वारा उक्त परिस्थिति की व्याख्या नहीं की गई थी जिससे पता चलता है कि अभियोजन पक्ष ने जानबूझकर पीडब्लू-5 के प्रारंभिक और पहले बेयान (विवरण) को रोक दिया था, तदनुसार, यह न्यायालय उपरोक्त विवाद में सार पाता है।

23. अपीलार्थी के वकील द्वारा किया गया चौथा महत्वपूर्ण तर्क यह है कि अभियोजन पक्ष घटना के स्थान को उचित संदेह से परे साबित करने में सफल नहीं हुआ। अभियोजन पक्ष के साक्ष्यों को देखने के बाद, हम उक्त तर्क में सार पाते हैं। पाथमिकी के अनुसार, घटना का स्थान यात्री ट्रेन के डिब्बे के अंदर बताया गया है। लेकिन कुछ परिस्थितियाँ ऐसी हैं जो इस न्यायालय के विश्वास को प्रेरित नहीं करती हैं कि वह घटना के स्थान को यात्री ट्रेन के डिब्बे के अंदर मानता है। सबसे पहले, अभियोजन पक्ष की कहानी के

अनुसार, कथित घटना एक ट्रेन के अंदर हुई जब वह गढ़ानी हाल्ट में रुकी। जब ट्रेन के भीतर या रेलवे स्टेशन या किसी अन्य रेलवे संपत्ति के परिसर में तब सरकारी रेलवे पुलिस (जी. आर. पी. या रेलवे सुरक्षा बल (आर. पी. एफ.) द्वारा जांच की जानी चाहिए, लेकिन इस मामले में, यात्री ट्रेन के डिब्बे में हत्या की कथित घटना के बावजूद रेलवे पुलिस द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई और न तो गार्ड और न ही जिस ट्रेन में कथित घटना हुई थी, उसमें प्रतिनियुक्त कोई अन्य रेलवे कर्मचारी कथित घटना के संबंध में कोई कानूनी कार्रवाई करने के लिए आगे आया और न ही पीरो रेलवे स्टेशन पर तैनात किसी भी रेलवे अधिकारी ने पीड़ित के शव को यात्री ट्रेन के डिब्बे से हटाने पर कोई कार्रवाई की। जाँच अधिकारी ने उनमें से किसी की भी जाँच नहीं की। अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य में यह सामने आया है कि कई यात्री यात्रा कर रहे थे और उस डिब्बे में बैठे थे जिसमें पीड़ित भी यात्रा कर रही थी और जब पीड़ित के शव को पीरो रेलवे स्टेशन पर डिब्बे से बाहर निकाला गया था, तो कई यात्री उस स्टेशन पर मौजूद हो सकते थे, लेकिन इनमें से किसी भी यात्री से जांच अधिकारी ने पूछताछ नहीं की और मुकदमे के दौरान अभियोजन पक्ष ने उनमें से किसी की भी जांच न करने के लिए कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया। दूसरी परिस्थिति यह है कि अभि.ग.-4 और अभि.ग.-5 के साक्ष्य के अनुसार, पीड़ित के बेटे जो एक ही डिब्बे में पीड़ित के साथ यात्रा कर रहे थे, अपीलार्थी और सह-अभियुक्त व्यक्तियों को आरा पटना रेलवे स्टेशन में देखा गया था। जहाँ से वे ट्रेन में सवार हुए और पीड़ित अपने बेटों के साथ उसी स्टेशन से उसी ट्रेन में सवार हुई। आरा रेलवे स्टेशन एक बड़ा रेलवे स्टेशन है और यह आम बात है कि लगभग सभी रेलवे स्टेशनों, विशेष रूप से जिला मुख्यालयों के स्टेशनों को सभी प्लेटफार्मों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर सीसीटीवी कैमरों से लैस किया गया है। यदि अपीलकर्ता आरा रेलवे स्टेशन पर आया और अन्य सह-अभियुक्त व्यक्तियों के साथ ट्रेन में चढ़ा तो निश्चित रूप से उसकी गतिविधि सीसीटीवी कैमरों में कैद हो जाती, लेकिन जांच अधिकारी ने कथित घटना के दिन के सीसीटीवी फुटेज की जांच करने के लिए कोई मेहनत

नहीं की। तीसरी परिस्थिति यह है कि जांच अधिकारी मृतक के शव के साथ संबंधित सामग्री जैसे कि पीड़ित का रेलवे टिकट, पर्स आदि की उपस्थिति के संबंध में चुप रहा, जबकि पीड़ित पुत्र अभि.ग.-5 ने बयान दिया कि उसकी मां (पीड़िता) के पास रेलवे टिकट था। चौथी स्थिति यह है कि जांच अधिकारी ने कोच में पाए गए खून के धब्बों को जब्त नहीं किया और इस संबंध में उनकी प्रतिपरीक्षा का कंडिका संख्या-9 प्रासंगिक है। यहां, यह उल्लेख करना प्रासंगिक है कि अभियोजन पक्ष के अनुसार, दो इस्तेमाल किए गए कारतुस बरामद किए गए और कोच से जब्त किए गए जिसमें गोलीबारी की कथित घटना हुई थी और इस संबंध में, जब्ती पीतांबर चौधरी एक पुलिस अधिकारी, जो चारपोखारी पुलिस स्टेशन में तैनात है द्वारा की गई थी लेकिन उक्त पीतांबर चौधरी को अभियोजन पक्ष द्वारा निचली अदालत के समक्ष पेश नहीं किया गया और उनसे पूछताछ नहीं की गई। इसके अलावा, जब्त किए गए दो कारतुसों को गैर सीलबंद हालत में निचली अदालत के समक्ष पेश किया गया और इस संबंध में अभि.ग.-8 का साक्ष्य प्रासंगिक है। पाँचवाँ मामला यह है कि कथित घटना के ठीक बाद पीड़ित के बेटों का आचरण कुछ अविश्वसनीय बना रहा क्योंकि वे चारपोखारी रेलवे स्टेशन पर ट्रेन से उतर गए और पीड़ित के शव को डिब्बे में छोड़ दिया और उसके बाद अकेले चारपोखारी थाना की ओर बढ़ने लगे जो विश्वास करने योग्य नहीं था क्योंकि पीड़ित के बेटे उस समय केवल बारह वर्ष के थे। छठी परिस्थिति यह है कि अभि.ग.-1, अभि.ग.-2 और अभि.ग.-3, जिनका पीड़ित के साथ किसी प्रकार का संबंध है, उन्हें संयोग गवाह के रूप में दिखाया गया था, लेकिन पिछले कंडिका में चर्चा की गई परिस्थितियों को देखते हुए, उन स्थानों पर उनकी उपस्थिति स्वाभाविक नहीं थी जहां वे होने का दावा करते थे और उन्होंने विरोधाभासी बयान भी दिए और वे सुसंगत नहीं रहे।

24. घटना के कथित स्थान से संबंधित उपरोक्त चर्चा की गई परिस्थितियों को देखते हुए, हम अपीलार्थी के वकील के उपरोक्त विवाद से सहमत हैं।

25. आरोप के अनुसार, जब को तब अपीलार्थी ने पीड़ित के शरीर में बहुत करीब से तीन गोलियां चलाईं। वह बैठने की स्थिति में थी और यह अभियोजन पक्ष का मामला नहीं है कि अपीलार्थी ने पीड़ित पर दो अलग-अलग स्थितियों से गोली चलाई। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार, मृतक के शरीर पर बंदूक की गोली के तीन घाव पाए गए। शव का पोस्टमॉर्टम करने वाले अभि.ग.-9 डॉ. मिथिलेश कुमार के अनुसार, बंदूक की दों गोली की चोटें बाईं ओर से दाईं ओर लगी थीं, जबकि तीसरी चोट दाईं ओर से लगी थी। इस गवाह के साक्ष्य से पता चलता है कि हमलावर ने पीड़ित को आग्नेयास्त्र से चोट पहुँचाने के लिए दो अलग-अलग स्थितियों का इस्तेमाल किया, लेकिन उक्त परिस्थिति को अभि.ग.-4 और अभि.ग.-5 के साक्ष्य से पुष्टि नहीं मिलती है, जिन्हें कथित घटना का चश्मदीद गवाह कहा जाता है।

26. यहां यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि अभि.ग.-4 और अभि.ग.-5 अभियोजन पक्ष के स्टार गवाह हैं, जिन पर निचली अदालत ने अपीलार्थी को दोषी ठहराते समय अत्यधिक भरोसा रखा और निचली अदालत ने अपीलार्थी के खिलाफ लगाए गए आरोप के संबंध में उनके साक्ष्य को विश्वसनीय माना, लेकिन सह-आरोपी शिव चौधरी उर्फ रामजी राय के खिलाफ लगाए गए आरोप के संबंध में निचली अदालत ने इन गवाहों के समान साक्ष्य पर भरोसा नहीं किया, जिन्होंने अपीलार्थी के साथ मुकदमे का सामना किया और निचली अदालत ने कहा कि बाल-गवाह के साक्ष्य को पटना उच्च न्यायालय सी. आर. के खिलाफ उनके द्वारा उक्त सह-अभियुक्त पर लगाए गए आरोप के संबंध में पुष्टि की आवश्यकता है। निचली अदालत का यह दृष्टिकोण उचित नहीं लगता है।

27. अपीलार्थी ने छद्म आवेदन लिया है और उसके अनुसार, वह जम्मू के किश्तवाड़ में अपने पोस्टिंग स्थान पर मौजूद था। इस बचाव के समर्थन में, अपीलार्थी ने 4 गवाहों की जांच की और दस्तावेजी साक्ष्य जैसे मेस डाइट, उपस्थिति रजिस्टर, आगमन-प्रस्थान रजिस्टर, मुख्य द्वार ड्यूटी रजिस्टर आदि प्रस्तुत किए और उन्हें बचाव पक्ष के गवाहों की मदद से प्रदर्शित कराया। विद्वत विचारण न्यायालय ने अपीलार्थी की अन्यत्रता

बहाना पर भरोसा नहीं किया। इस संबंध में, निचली अदालत का दृष्टिकोण सही प्रतीत होता है क्योंकि प्र.ग.-1, जिसे जम्मू के किश्तवाड़ में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में उप-निरीक्षक के रूप में तैनात किया गया था, ने बयान दिया कि अपीलकर्ता 20 अर्जित अवकाश खर्च करने के बाद 31.01.2015 पर आया था, लेकिन उसके बाद वह अनुपस्थित हो गया और यह स्पष्ट नहीं था कि वह फिर से छुट्टी पर चला गया या नहीं। प्र.ग.-1 बचाव पक्ष का एक महत्वपूर्ण गवाह है क्योंकि उसने अपीलार्थी की उपस्थिति से संबंधित संबंधित रजिस्टरों को उसके नियुक्ति स्थल पर देखा था। तदनुसार, हम अपीलार्थी द्वारा लिए गए उपरोक्त बचाव में कोई बल नहीं पाते हैं।

निष्कर्षः

28. अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्यों पर चर्चा करने और उपरोक्त चर्चा की गई परिस्थितियों को ध्यान में रखने के बाद, यह न्यायालय यह राय बनाता है कि यद्यपि पीड़िता जो कथित घटना के प्रासंगिक समय पर अपने पति (अपीलार्थी) के साथ मुकदमें बाजी रही थी, उसे बंदूक की गोली से घायल करके मार दिया गया था, लेकिन अभि.ग.-1, अभि.ग.-2 और अभि.ग.-3, जो अभियोजन पक्ष के महत्वपूर्ण गवाह हैं, को संबंधित स्थानों पर संयोग गवाह के रूप में रखा गया प्रतीत होता है और अभियोजन पक्ष द्वारा दिखाए गए स्थानों पर उनकी उपस्थिति इस अदालत का विश्वास प्रेरित नहीं करती है और पीड़ित के बेटे, अभि.ग.-4 और अभि.ग.-5, जिन्हें घटना का चश्मदीद गवाह कहा जाता है, घटना के ठीक बाद की अवधि के दौरान अभि.ग.-1 और अभि.ग.-2 के नियंत्रण में रहे, जब तक कि पुलिस और अदालत के समक्ष उनकी जांच नहीं हुई और वे प्रशिक्षित गवाहों और घटना स्थल के रूप में पेश हुए। अतः, इन परिस्थितियों के आलोक में और ऊपर चर्चा किए गए कारणों के लिए, अपीलार्थी संदेह के लाभ का हकदार है। और इस न्यायालय को अपीलार्थी की दोषसिद्धि को बरकरार रखने के लिए राजी नहीं किया जाता है और हम विवादित निर्णय और आदेश में हस्तक्षेप करने के लिए पर्याप्त सामग्री पाते हैं। इस प्रकार, अभियुक्त अपराधों

के लिए अपीलार्थी को दोषी ठहराने और सजा देने वाले विवादित निर्णय और आदेश को इसके द्वारा दरकिनार कर दिया जाता है और तत्काल अपील की अनुमति दी जाती है।

29. यदि किसी अन्य मामले में उसकी अभिरक्षा की आवश्यकता नहीं है तो वर्तमान मामले में अपीलार्थी को तुरंत रिहा कर दिया जाए।

30. निम्न न्यायलय के रिकॉर्ड को संबंधित निचली अदालत में वापस भेजा जाए।

31. फैसले की प्रति को आवश्यक होने पर निचली अदालत के साथ-साथ संबंधित जेल प्राधिकरण को भेजा जाए।

(शैलेंद्र सिंह, न्यायमूर्ति)

मैं सहमत हूँ।

(राजीव रंजन प्रसाद, न्यायमूर्ति)

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नही किया जा सकता। समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।